सम्पर्क सूत्र :- बेतिया

1. श्री एस० के मिश्रा जी
   फोन- 9431267787
2. श्री अयोध्या प्रसाद जी
   फोन- 9661016263
3. श्री मथुरा पाण्डेय जी
   फोन- 9472054280
4. डा० यू० एस० पाठक जी
   फोन- 06254-242725
5. डा० वी० एन० शर्मा जी
   फोन- 9430572035
6. श्री वी० के० झा जी
   फोन- 06254-259407
7. श्री अखिलेश्वर प्रसाद जी
   फोन- 9431642479

सीतामढ़ी एवं मुजफ्फरपुर

1. श्री दुखहरण चौधरी जी
   फोन- 9430068916
2. प्रो० गगनदेव यादव जी
   फोन- 9905029170
3. डा० कृष्णा कुमार जी
   फोन- 8292665638

09204203546

नोट:-

1. परमसंत महाराज श्री सुरेश जी (पूज्य भैया जी) दिनांक 14-02-2012, [redacted] को सप्तक्रांति एक्सप्रेस द्वारा आनंद बिहार (दिल्ली) से चलकर 15-02-2012 को मुजफ्फरपुर 10 बजे दिन में पहुँचेंगे तथा दिनांक 21-02-2012 को सप्तक्रांति एक्सप्रेस द्वारा बेतिया से दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे ।

2. परमपूज्य भैयाजी दिनांक 15-02-2012 से दिनांक 18-02-2012 तक मुजफ्फरपुर एवं सीतामढ़ी क्षेत्र के सत्पसंग केन्द्रों का भ्रमण करेंगे एवं सड़क मार्ग द्वारा 18-02-2012 को ही रात्रि में बेतिया पहुँचेगें ।

3. सत्संग कार्यक्रम 19-02-2012 से 21-02-2012 तक बेतिया में हो रहा है। अत: सभी सत्संगी भाई-बहन एवं अन्य भक्तगण बेतिया ही पहुँचने की कृपा करें ।

सत्संग में भाग लेने वाले साधकों के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश

1. प्रत्येक सत्संगी भाई और बहन अपने आप को मेहमान और मेजबान दोनों समझें ।
2. पण्डाल में ठीक समय से पहुंचकर सभी सत्संग कार्यक्रमों में भाग लें जिससे कि अधिक आध्यात्मिक लाभ प्राप्त हो सके।
3. कार्यक्रम के दौरान अपने मोबाईल फोन बंद रखें ।
4. सत्संग स्थान पर आने के बाद अपना हृदय परमात्मा की याद में डुबाये रखें ताकि आप अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें ।
5. हर काम शान्तिपूर्वक परमात्मा की याद में करें ।
6. पण्डाल में पहले आने वाले व्यक्ति आगे बैठें ताकि बाद में आने वाले व्यक्तियों को असुविधा न हो।
7. माताएं, शिशुओं और बच्चों को लेकर आन्तिरिक सत्संग और सामूहिक शान्ति पाठ मे न बैठें ।
8. राम नाम के अतिरिक्त सत्संग स्थल पर किसी दूसरे विषय पर अनावश्यक बातचीत न करें, खाली समय प्रभु याद में बितायें ।
9. सुरक्षा कारणों के दृष्टिगत अपना परिचय पत्र परिसर में पहुँचने पर तुरन्त बनवा लें और हर समय अपने पास रखें ।
10. बहुमूल्य बस्तुएं हर्गिज साथ न लावें। आवश्यकतानुसार वस्त्र, बिस्तर, अपने व्यक्तिगत प्रयोग का सामान तथा माला, टार्च, टोपी और ऑडोमॉस अपने साथ अवश्य लायें ।
11. किसी सत्संगी भाई या बहन की वस्तु बिना उसकी आज्ञा के न लें।
12. पंडाल एवं शाँति पाठ कक्ष परिसर में विशेष रूप से शाँति का वतावरण बनायें रखें ।
13. सत्संग परिसर की स्वच्छता एवं पवित्रता का ध्यान रखें। कूड़ा इधर-उधर न फेंके तथा अपने जूते-चप्पल अपने ठहरने के स्थल पर ही छोड़कर आँए ।

परमात्मा तू ही है तेरी इच्छा पूर्ण हो

अखिल भारतीय संतमत सत्संग दिल्ली

आध्यात्मिक उत्सव

बेतिया (बिहार)

19 फरवरी से 21 फरवरी 2012 तक

सत्संग स्थल

तीन लालटेन चौक के नजदीक, भोला बाबू का दवाखाना के पिछे शुभ लक्ष्मी विवाह भवन, पश्चिम चम्पारण (बेतिया) बिहार (पिनकोड-845438)

मुख्यालय :

अखिल भारतीय सन्तमत सत्संग (रजि0)
बी-20 सी.सी. कॉलोनी, राणा प्रतापबाग
के सामने, दिल्ली-7

अधिक जानकारी के लिए

Website: www.abssatang.org
E-mail: info@abssatsang.org
Facebook : www.facebook.com
Search id: sureshbhaiyaji

संरक्षक के व्यक्तिगत सम्पर्क के लिए

E-mail yashroopji@gmail.com

सत्संग का संक्षिप्त परिचय

आधुनिक परिवेश में भौतिक स्तर पर हमने भले ही काफी उन्नति कर ली हो लेकिन साथ-साथ तनाव व असन्तुष्टि भी हम पर प्रभाव डालते गये। इसका एकमात्र विकल्प ध्यान-योग ही है जिसका अभ्यास व चिन्तन 'अखिल भारतीय सन्तमत सत्संग' में क्रियात्मक रूप से करवाया जाता है। आज की आधुनिक जीवन शैली को देखते हुए हमारे सिलसिले के बुजुर्गो/सत्गुरूओं ने इसका अनुभव किया व तनाव रहित जीवन बिताने के लिये इस सुन्दर शैली का विकास किया जिससे गृहस्थ जीवन में रहते हुए आत्मिक आनन्द और सच्चा सुख प्राप्त हो। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य इस शैली के सिद्धान्तों का जनमानस में ध्यान व चिन्तन **(Concentration & Meditation)** की सरल विधि बताना है। यह एक ऐसी विधि है जिसको अपनाने से गृहस्थ जीवन का यापन करते हुए निरन्तर परमात्मा की याद बनी रहे और साथ-साथ गृहस्थ के सांसारिक कार्य आज से और अधिक सुन्दर हों और हमें इसी जीवन में सच्ची निष्काम-कर्मता व सच्चा आनन्द प्राप्त हो।

आनन्द योग का पवित्र ज्ञान वही प्राचीन ब्रह्म-ज्ञान है जिसे महर्षि अष्टावक्र जी ने अपने प्रिय शिष्य राजा जनक को प्रदान कर साक्षात्कार का दिग्दर्शन करवाया। यह आध्यात्मिक विद्या केवल हिन्दुओं की ही धरोहर नहीं रही अपितु इसका प्रचार-प्रसार अन्य धर्मो में भी हुआ। हजरत मौलाना फजल अहमद खाँ साहब कुद्दुसुरूह ने महात्मा रामचन्द्र जी महाराज को अपना उत्तराधिकारी चुनकर हिन्दुओं में पुनः इस विद्या का प्रचार किया। सन्त-सत्गुरूओं की एक गौरवशाली श्रृंखला ने आज तक ब्रह्मज्ञान की दिव्य ज्योति को प्रज्जवलित करके रखा हैं ।

इस श्रृंखला में परम सन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज, परम सन्त रघुवर दयाल जी महाराज, परम सन्त बृजमोहन लाल जी महाराज, परम सन्त यशपाल जी महाराज परम सन्त श्रीमती रूपवती जी (धर्मपत्नी परम संत यशपाल जी महाराज) एवं वर्तमान में परमसंत श्री सुरेश जी महाराज (पूज्य भैया जी) जैसे उच्चकोटि के सत्गुरू हुए। इन सन्तों ने गृहस्थ धर्म का शास्त्रानुसार पालन करते एवं स्वयं जीविकोपार्जन करते हुए अध्यात्म विद्या का प्रचार-प्रसार किया। परम सन्त महात्मा श्री सुरेश जी महाराज (पूज्य भैया जी) साधकों के मार्गदर्शन के लिए उपलब्ध रहते हैं और अहर्निश इसी कार्य में सतत संलग्न है।

आध्यात्मिक व सामाजिक उत्थान के उद्देश्य से सम्पूर्ण भारतवर्ष एवं विदेशों के केन्द्रों पर हर रविवार को प्रातः 9 बजे से 11 बजे तक एवं वृहस्पतिवार को सायं 6.30 बजे से 8 बजे तक योगाभ्यास-सत्संग का आयोजन किया जाता है जिसमें मुख्यतः ध्यान-योग करवाया जाता है। हमारे तरीके से अभ्यास करने पर एवं सत्संग कार्यक्रमों में नियमित रूप से भाग लेने पर सच्चा आनन्द, सुषुप्ति, आध्यात्मिक चक्रों का जागरण, सहज समाधि, जीवन-मुक्त अवस्था आदि दुलर्भ आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होते हैं।

ॐ

जय सत्यगुरूदेव जय पद्शरणम्

अध्यात्मिक उत्सव, बेतिया

॥ सत्संग कार्यक्रम ॥

पूज्य माताओं एवं वन्धुओं,

यह सूचित करते आपार हर्ष हो रहा है कि परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से अखिल भारतीय संत मत सत्संग के तत्वाधान में देश के विभिन्न प्रदेशों में होने वाले आध्यात्मिक उत्सवों की श्रृंखला में दिनांक 19-2-2012 से 21-02-2012 तक बेतिया (बिहार) में आध्यात्मिक उत्सव का आयोजन होने जा रहा है। इस शुभ अवसर पर अखिल भारतीय संत मत सत्संग के संरक्षक परम संत महात्मा श्री सुरेश जी महाराज (परम पूज्य भैयाजी) पधार रहे हैं ।

अतः आप सभी भगवत प्रेमियों से प्रार्थना है कि इस पुनीत अवसर पर पधार कर सद्गुरूओं की आत्मिक कृपाधार का लाभ उठावें तथा अपने साथ अन्य प्रभु-प्रेमियों को लाने की कृपा करें ।

विनीत-

समस्त-सत्संगी परिवार

बिहार, झारखण्ड

अखण्ड शांति पाठ रविवार

अखण्ड शान्तिपाठ 19 फरवरी 2012 दिन [redacted] प्रातः 7 बजे से प्रारम्भ होकर 20 फरवरी 2012 दिन [redacted] सोमवार संध्या 7 बजे (36 घंटे का) समाप्त होगा। इस पाठ में "ॐ शान्ति" मन्त्र का जाप जिव्हा से नहीं अपितु हृदय से **(Not by tongue but by thought)** किया जाता है। इस जाप से साधकों को आन्तरिक शान्ति और आनन्द का अनुभव होता है ।

क्रार्यक्रम-

19-02-2012 ([redacted]) रविवार

प्रातः 6 बजे से 6.30 बजे तक	रामधुन
9 बजे से 10 बजे तक	ध्यानयोगाभ्यास
10 से 11 बजे तक	सत्संग के सिद्धान्तों पर प्रकाश
12 बजे से 4 बजे तक	सत्संग केन्द्रों का भ्रमण
संध्या 6 से 7 बजे तक	ध्यानयोगाभ्यास।
7 से 8 बजे तक	सत्संग के सिद्धान्तों पर प्रकाश
8 से 8.30 बजे तक	प्रसाद वितरण ।
10 से 11 बजे तक	टोली चर्चा

20-02-2012 ([redacted]) सोमवार

प्रातः 6 बजे से 6.30 बजे तक	रामधुन
9 से 10 बजे तक	ध्यानयोगाभ्यास
10 से 11 बजे तक	सत्संग के सिद्धान्तों पर प्रकाश
12 बजे से 4 बजे तक	सत्संग केन्द्रों का भ्रमण
संध्या 6 से 7 बजे तक	सामूहिक शांतिपाठ
7 से 8 बजे तक	सत्संग के सिद्धान्तों पर प्रकाश
8 से 8.30 बजे तक	प्रसाद वितरण ।
10 से 11 बजे तक	टोली चर्चा

21-02-2012 ([redacted]) मंगलवार

प्रातः 6 बजे से 6.30 बजे तक	रामधुन